भण्डार गृह में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन

कृषि कुंभ (मार्च, 2023),
खण्ड 02 भाग 10, पृष्ठ संख्या 54–56

भण्डार गृह में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन

रवि कुमार रजक एवं रागनी देवी
शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविधालय कुमारगंज, अयोध्या उतर प्रदेश–224229, भारत।

Email Id: ravikumarrajak0106@gmail.com

परिचय

खेत से फसल की कटाई के बाद सबसे जरुरी काम अनाज भंडारण का होता हैं। और अनाज को सुरक्षित भंडारण रखने के लिए वैज्ञानिक विधि को अपनाने की जरुरत होती हैं। और जिससे अनाज को लम्बे समय तक चूहे और कीट एवं नमी और फफूंद आदि से बचाया जा सकें। और भण्डारण खाघान्नों में लगने वाले कीट लेपिडोप्टेरा एवं कोलिओप्टेरा ऑर्डर के होते हैं। और जो भंडारण अनाज में अधिक नमी और तापमान की दशा में अत्यधिक हानि पहुंचाते हैं। और इनमे से चावल का घुन, अनाज का पतंगा, या तितली, छोटी सुरसुरी और दाल भ्रंग, खपरा बीटल एवं अन्य कीट अत्यधिक हानिकारक हैं। और जो दानो को खाकर खोखला कर देते हैं। एवं अनाज की पौष्टिकता और कीडों की मलमूत्र, अण्डों, और मरे हुए कीटों में नमी के कारण पैदा हुई फफूंद से नष्ट हो जाती हैं। और भण्डार ग्रह में लगने वाले कीट अनाज की मात्रा को खत्म कर देते हैं। और इसके साथ–साथ उनके पौष्टिक गुणों को भी नस्ट कर देते हैं।

भण्डारण ग्रह के मुख्य कीट

1. चावल का घुन कीट –

पहचान एवं लक्षण–इस कीट की सुंडी तथा प्रौढ दोनों ही नुकसाान पहुंचाते हैं। परन्तु इस कीट की सुंडी ज्यादा नुकसान पहुंचाती हैं। और इसका प्रौढ कीट भूरे रंग का लम्बा व बेलनाकार होता हैं। और इसके सिर के आगे लम्बी सूण्ड निकली रहती हैं। और इसकी मादा कीट दाने में एक छोटा छिद्र बनाकर उसमें अण्डा देती हैं।

जिसमें से सुण्डी निकलने के बाद दाने के अन्दर के समस्त भाग को खा जाती है। और इस कीट का प्रकोप होने से दाने खोखले हो जाते हैं। और फिर अनाज के दाने खाने योग्य नही रहते हैं। और यह कीट चावल के अलावा गेहूं, मक्का आदि को भी नुकसान पहुंचाता हैं।

2. खपरा बीटल कीट–

पहचान एवं लक्षण– इस खपरा बीटल कीट की सुण्डी ही अकेली नुकसान पहुंचाती हैं। और यह कीट वर्ष भर नुकसान पहुंचाते हैं। परन्तु यह कीट अधिक नुकसान जुलाई से अक्टूबर महीनें में करते हैं। और इसकी सुंडी दाने के भ्रूण वाले भागों को खाती है। ये दाने के अन्दर प्रवेश नही करती है। लेकिन बाहर वाले भाग में ही नुकसान करती रहती हैं। और इस कीट का प्रौढ स्लेटी भूरे रंग का होता हैं। जिसकी लम्बाई 2.5 मिमी. तथा 2 मिमी. होती हैं। और इसका शरीर

अण्डाकार और सिर छोटा होता हैं। और यह कीट भी गेहूं, चावल, मक्का, ज्वार,जौ आदि को नुकसान पहुंचाते हैं ।

3. दालों का घुन कीट–

पहचान एवं लक्षण– इसका प्रौढ कीट लगभग 3. 2 मिमी. लंबा होता हैं। और इसका शरीर भूरा तथा शरीर आगे की ओर नुकीला तथा पीछे चौडा होता हैं। और इस दाल घुन कीट का प्रकोप खेत और भण्डार ग्रह दोनों जगह पर होता हैं। और इस कीट की सूण्डी नुकसान पहुंचाती हैं। और जब फसल खेत में होती हैं तब से ही इसका प्रकोप शुरु हो जाता हैं। और मादा कीट फलियों के उपर अण्डे देती हैं। और अण्डे से फिर सूण्डी निकलती हैं तो यह फली में छेद करके अंदर प्रवेश कर जाती हैं। तथा दानों को खाती रहती हैं। और जिस जगह से सूण्डी दानों में घुसती हैं वह बन्द हो जाता हैं। तथा दाना बाहर की ओर से स्वस्थ दिखता हैं। इस तरह से ग्रसित दानें भण्डार ग्रह में आ जाते हैं ।

4. अनाज की सुरसुरी कीट–

पहचान एवं लक्षण– अनाज की सुरसुरी कीट प्रौढ गहरे भूरे, काले रंग 2 से 4 मिमी. लंबे सिर आगे की ओर इसका सूंड थूथन के रुप में होता हैं। एवं इसके पंख के उपर चार छोटे हल्के धब्बेनुमा रचना होती हैं। यह कीट पूर्ण दानों को नुकसान नही पहुंचाता यह केवल कटे हुए दानों या अन्य कीटों के द्वारा ग्रसित दानों को ही नुकसान पहुंचाता हैं। और जब इस कीट की संख्या अधिक हो जाती हैं। तो आटा पीले रंग का हो जाता हैं और इसमें फफूंद विकसित हो जाता हैं तथा एक प्रकार की अप्रिय गंध आने लगती है और आटा खाने योग्य नहीं रहता हैं ।

5. लघु धान्य बेधक –

पहचान एवं लक्षण–इस कीट की सूण्डी और प्रौढ दानों ही नुकसान पहुंचाते हैं। और इसकी सूण्डी लगभग 2 से 3 मिली मीटर लम्बी, गंदी सफेद रंग की होती हैं। और हल्के भूरे रंग का सिर होता हैं। प्रौढ कीट छोटा बेलनाकंर गहरा भूरा अथवा काले रंग के शरीर वाला होता हैं। और इसका धड नीचे की तरफ होता हैं। और इसका प्रौढ दानें में टेढे–मेंढे छेद करके उन्हे पाउडर में बदल देते हैं। और जिसकी वजह से केवल भूसा और आटा ही शेष रह जाता हैं। और यह सूण्डी दाने के स्टार्च को खाती हैं। और केवल छिलके को ही शेष छोडती हैं। इस कीट का आक्रमण गेहूं, चावल, ज्वार, मक्का, बाजरा में अधिक होता हैं ।

6. अनाज का पतंगा–

पहचान एवं लक्षण–यह कीट सुनहरे भूरे रंग के उडने वाले पतंगे होते हैं। और प्रौढ 5–7 मिली मीटर लम्बे अनाजों की सतहों पर ढेर में लगते हैं। और इसके अगले पंख हल्के पीले, पिछले भूरे तथा आखिरी सिर कुछ नुकीले एवं लम्बें बाल युक्त होते हैं। और इसकी सुण्डी एक दानों के भीतर छिद्र करके खाती हैं। और विकसित होकर प्रौढ के रुप में निकलती हैं।

नियंत्रण के उपाय–

अनाज की सफाई

- अनाज की कटाई के साथ ही उसके उचित भण्डारण की तैयारी शुरु हो जाती हैं।
- बाजरा, गेहूं, मक्का, ज्वार आदि सिट्टे और बलियां जिस बोरे में भरकर रखना हो उस बोरे को पहले से ही एक प्रतिशत मैलाथियॉन के घोल में 10 मिनट भिगो कर अच्छी तरह सुखाएं।
- तेज धूप में 5 से 6 घंटे सुखाने पर कीडों का प्रकोप बहुत कम हो जाता हैं ।
- काटे हुए अनाज को सीधे जमीन पर न रखें, इससे कीडें और नमी दोनों से अनाज प्रभावित होगा।
- सूखे हुए अनाज को शाम के समय कोठी में न भरें।
- सूखे अनाज को पूरी रात खुली हवा में ठन्डा होने दे और सुबह उसे कोठी में भरें।

- भण्डारण ग्रह की सफाई अच्छे से करे।
- भण्डारण ग्रह में छत, फर्श, खिडकियां एवं दरवाजे प्रमुख होते हैं।
- फर्श में कहीं पर भी दरारें हो तो उन्हें सीमेन्ट से भर देना चाहिए।
- जहां तक संभव हो एक पाले का दरवाजा रखें।
- खिडकियां बाहर खुलने वाली हो और उॅचाई पर हो।

बोरे की सफाई–

- अनाज को जूट के बोरों या कट्ठठों में भी संग्रह कर सकते हैं, जहां तक संभव हो एक नये बोरों का प्रयोग करें, अगर बोरें पुराने हैं तो उन्हें 1 प्रंतिशत मैलाथियॉन के घोल में आधे घंटे भिगोएं और कडी धूप में 2 से 3 दिन उलट पलट कर सुखा लें।
- यह काम गर्मी के मौसम में कर ले तो अच्छा रहेगा।
- यदि बोरे कहीं से फटे हैं, तो उन्हें सिला लें ।
- अनाज भरने के बाद बोरे का मुंह अच्छी तरह सिल दें।

कीट प्रकोप के पूर्व बचाव–

- गोदामों में नया अनाज रखने के पूर्व उन्हे अच्छी प्रकार साफ–सफाई करके, नीम की पत्तियां जलाकर प्रघूमित कर लें या फिर अच्छी प्रकार कई दिन तक धूप दिखाए।
- भंडारित किए जाने वाले अनाज को पूरी तरह से सुखा लें, जिसकी नमी 10 से 12 प्रतिशत के आसपास हो और वह दांतों से तोडने पर कडक अवाज के साथ टूटे।
- अनाज ढोने वाले वाहनों की साफ–सफाई अच्छी तरह ध्यान से करे।
- कीट प्रकोप के पहले फिनायल से गोदामों का उपचार करें।
- जुलाई से अक्टूबर तक अधिक नमी वाले दिनों में 15 से 20 दिन के अंतराल पर कीट प्रकोप की जांच करते रहें।
- हवा अवरोधी भंडारों में एल्युमिनियम फॉस्फाइड की एक गोली को 1 टन अनाज में भंडार को 7 दिन तक पूर्ण रुप से हवा बंद रखें।

प्राकृतिक पदार्थो द्वारा संरक्षण

- नीम की पत्तियां व उसका तेल, हल्दी पाउडर, मूंगफली व सरसों का तेल, कपूर आदि पदार्थो का प्रयोग करने से उनकी गुणवत्ता में बगैर किसी ह्रास के सुरक्षित रखा जा सकता हैं।
- गेहूं में राख मिलाकर या फिर नीम की पत्तियां या उनका सूखा चूरा मिलाकर रखा जा सकता हैं।
- सूखा गेहूं बीन में भरते समय नमक की डालियों की पोटली बनाकर बीच–बीच में डालने से नमी नहीं बढने पाती तथा अनाज सुरक्षित बना रहता हैं।
- सूजी को अधिक समय तक रखने हमेशा भूनकर ही रखें।
- साबुत दालों में 5 ग्राम खाने वाला तेल प्रति किलो मिलाकर रखें।

रसायनों द्वारा कीट नियंत्रण

- ई. डी. बी. एम्पयूल 30 मिली प्रति मीट्रिक टन अनाज के लिए उपयुक्त हैं।
- सेल्फोस एल्यूमिनीयम फॉस्फाईड की 3 ग्राम की एक गोली प्रति मीट्रिक टन अनाज के लिए डालें।
- कीटों का आक्रमण कर देने के बाद 3 मिली. की 1 ई. डी. बी. एम्पूल प्रति क्विंटल अनाज की दर से कोठी में डालें